Part -1

Neutralism — अनुभयवाद मूल तत्व की प्रकृति को न जड़, न चेतन बल्कि दोनों से भिन्न, अनुभय (Neutral) बताता है। इस सिद्धान्त के अनुसार मूल तत्व ऐसा है कि उसकी उपयुक्त परिभाषा न तो भौतिक कह कर की जा सकती है, न मानसिक कहकर क्योंकि वह दोनों से विलक्षण है। दोनों में किसी के प्रति उसका झुकाव नहीं है, वह दोनों से तटस्थ (Neutral) है। इसलिए अनुभयवाद को तटस्थवाद भी कहा जा सकता है किन्तु निर्गुणवाद नहीं। अनुभयवाद मानता है कि अनुभूत जड़ और चेतन दोनों सामानतः सत्य है। इसलिए किसी भी एक का दूसरे में अन्तर्भाव करना उचित नहीं है, न तो जड़ की व्याख्या चेतन के आधार पर की जा सकती है न चेतन की व्याख्या जड़ के आधार पर। दोनों में इस प्रकार का अंतर है कि कोई दूसरे का कारण या आधार नहीं बन सकता। किन्तु यह अन्तर तत्व (Stuff) का नहीं बल्कि बनावट या संगठन (Structure) का है। दोनों की उत्पत्ति एक प्रकार के तत्व से हुई है जो उनसे भिन्न और प्राथमिक (Prior) है। यही तत्व परमार्थ सत्ता है। चूंकि यह जड़

और चेतन दोनों से भिन्न है, इसलिए इसे अनुभय (neutral) कहते हैं।

जड़ और चेतन की उत्पत्ति एक ही प्रकार के मूल तत्व से होती है, इसलिए उनका अन्तर परमार्थ (ultimate) नहीं है। मूल तत्व एक प्रकार का है, अर्थात् इसकी प्रकृति एकात्मक है। किन्तु इसकी संख्या को अधिकांश अनुभयवादी अनेक मानते हैं। अतः अनेक अनुभय तत्व परमार्थ तत्व या विश्व के मूल आधार हैं। मूल तत्वों में एक विशेष प्रकार का सम्बन्ध से चेतन। जड़ और चेतन के निर्माणक तत्वों में प्रकार का भेद नहीं है, सिर्फ उनकी सजावट का तरीका अलग-अलग है। कुछ दी हुई सीधी रेखाओं से चाहे तो हम त्रिभुज बना लें या चतुर्भुज। त्रिभुज और चतुर्भुज में अवश्य भेद है, किन्तु यह भेद उनके आकार का है, तत्व का नहीं, क्योंकि उन्हें बनाने वाली रेखाएं एक ही तरह की हैं। वे रेखाएं अपने आप में न त्रिभुज हैं, न चतुर्भुज बल्कि दोनों से तटस्थ या उदासीन पदार्थ हैं।